Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/227
Peer Reviewed & Refereed Journal, Jan-Feb 2024, Vol- 12/81
https://doi.org/10.5281/zenodo.10784641

उपन्यास से सिनेमा निर्माण का वैश्विक एवं मराठी परिपेक्ष्य

वृषाली सुरेश बापट & डॉ. सुरभि विप्लव
पीएच.डी. शोधार्थी (फिल्म अध्ययन) प्रदर्शनकारी कला विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
सहायक आचार्य (फिल्म अध्ययन) प्रदर्शनकारी कला विभाग (प्रयागराज केंद्र), महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Paper Received On 22 Jan 2024
Peer Reviewed On 26 Feb 2024
Released On: 01 March 2024

Abstract

उपन्यास और सिनेमा दोनों भी साहित्य की महत्वपूर्ण विधाओं के प्रकार है। यह दोनों का योगदान वैश्विक पटल पर साहित्य में अनन्य साधारण तो रहा ही है। उपन्यास का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य काफी लम्बा और समृद्ध रहा है जब कि सिनेमा की शुरुआत तकनीकी क्रांति के उपरांत हुई है। सिनेमा का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य उपन्यास के ऐतिहासिक परिपेक्ष्य से काफी कम पाया जाता है पर फिर भी आज सिनेमा काफी हद तक लोकप्रिय विधा हो चुकी है। उपन्यास और सिनेमा में अंतरसंबंध भी अधिक घनिष्ट पाया जाता है। सिनेमा निर्माण विभिन्न आधार पर पाया जाता है जिसको सिनेमा निर्माण का स्त्रोत भी कहा जा सकता है। जैसे कि,कोई सत्य घटना, काल्पनिक घटना, युद्ध, विशिष्ट सांस्कृतिक परम्परा एवं मान्यता (जैसे की कान्तारा), अप्रिय घटनाये, वैज्ञानिक आविष्कार, जीवनियाँ, नाटक, आपदाए एवं उपन्यास । इन सभी स्त्रोतों से सबसे बड़े पैमाने पर और आसानी से उपलब्ध स्त्रोत उपन्यास है। जिसका उपयोग सिनेमा निर्माताओं में पाया जाता है। जब इसके ऐतिहासिक परिपेक्ष्य की बात है तो "1899 में जॉर्ज मेलीज़ द्वारा रूपांतरित 'सिंड्रेला' किसी उपन्यास पर निर्मित पहली कहानी थी जो एक वास्तविक सिनेमा में परिवर्तित की गई थी)।" वही दूसरी और मराठी भाषा के उपन्यासोपर निर्मित मराठी सिनेमाओं की है तो इसका प्रारंभ "कुंकू" सिनेमा से पाई जाती है। कुंकू सिनेमा श्री. नारायण हरी आपटे द्वारा लिखित उपन्यास "न पटणारी गोष्ट" पर 1937 में वी. शांताराम द्वारा निर्देशित की गई थी। यह मराठी उपन्यास के आधार पर सिनेमा निर्माण का प्रारंभ कहा जा सकता है (इसके पूर्व भी यह प्रयोग पाया जा सकता है पर संबंधित जानकारी उपलब्ध नहीं)। उपन्यास से सिनेमा निर्मिती में उपन्यास को आंशिक और पूर्ण रूप से अपनाया जा सकता है या उपन्यास से प्रेरित होकर मिलती जुलती नयी कथा भी गाढ़ी जा सकती है, पर यहाँ बात उपन्यास को पूर्ण रूप से अपना कर सिनेमा निर्मिती की है (कथानक में सिनेमा में निर्धारित समय के चलते आंशिक बदलाव तो अपेक्षित है)। मराठी में यह पहले प्रयास के बाद "श्याम ची आई" सिनेमा जो साने गुरूजी द्वारा लिखित "श्याम ची आई" यह उपन्यास पर 1953 में प्रल्हाद केशव अत्रे द्वारा निर्देशित की गई। 1977 में गो. नि. दांडेकर द्वारा लिखित "जैत रे जैत" उपन्यास पर जब्बार पटेल की "जैत रे जैत", 1979 में सिहांसन, 1995 में बनगरवाडी, 2009 में डॉ.राजन गवस द्वारा लिखित "चौंडक" और "भंडारभोग" उपन्यास पर राजीव पाटिल निर्देशित

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

"जोगवा", तदुपरांत 2010 में जयवंत पवार का उपन्यास "अधांतर" पर महेश मांजरेकर निर्देशित "लालबागपरळ", 2010 में आनंद यादव का उपन्यास "नटरंग" पर रवी जाधव निर्देशित "नटरंग", 2011 में मिलिंद बोकील के उपन्यास "शाळा" पर संजय ढाकेद्वारा निर्देशित "शाळा", 2012 में व. पु. काळे के उपन्यास "पार्टनर" पर समीर रमेश सुर्वे निर्देशित "श्री पार्टनर",2013 में राजन खान की उपन्यास "सतनागत" पर राजू पर्सेकर द्वारा निर्देशित "सतनागत", और सुहास शिरवळकर के उपन्यास "दुनियादारी" पर संजय जाधव निर्देशित "दुनियादारी", 2014 में डॉ प्रकाश बाबा आमटे के उपन्यास "प्रकाशवाट" पर समृद्धी पोरे द्वारा निर्देशित "डॉ प्रकाश बाबा आमटे", 2017 में जयवंत दळवी का उपन्यास "ऋणानुबंध" पर प्रसाद ओक द्वारा निर्देशित "कच्चा लिंबू", 2017 में बाबा भांड के उपन्यास "दशक्रिया" पर संदीप भालचंद्र पाटील द्वारा निर्देशित "दशक्रिया", 2018 में कांचन काशिनाथ घाणेकर के उपन्यास "नाथ हा माझा" पर अभिजीत देशपांडे द्वारा निर्देशित "आणि डॉ. काशीनाथ घाणेकर", 2019 में नीला सत्यनारायण के उपन्यास "ऋण" पर समीर रमेश सुर्वे निर्देशित "जजमेंट" और 2019 में अण्णाभाऊ साठे के उपन्यास "आवडी" पर प्रवीण क्षीरसागर द्वारा निर्देशित "इभ्रत", 2022 में अरुण साधूका उपन्यास "झिपऱ्या" पर केदार वैद्य द्वारा निर्देशित "झिपऱ्या", और विश्वास पाटील के उपन्यास "चंद्रमुखी" पर प्रसाद ओक निर्देशित "चंद्रमुखी" आदि सिनेमा के प्रयास पाए जाते है। इन उपन्यास और सिनेमाओं दोनों को जनमानस द्वारा सराहा भी गया है।

प्रस्तावना: उपन्यास और सिनेमा यह दोनों साहित्य की महत्वपूर्ण विधाओं में से है। दोनों का योगदान वैश्विकस्तर पर साहित्य में अनन्य साधारण रहा है। उपन्यास का इतिहास काफी लम्बा रहा है जब की सिनेमा की शुरुआत तकनीकी निर्माण के उपरांत पाई जाती है। सिनेमा का इतिहास उपन्यास के इतिहास से काफी कम पाया जाता है पर फिर भी आज सिनेमा काफी हद तक लोकप्रिय विधा बन चुका है। उपन्यास और सिनेमा में अंतरसंबंध भी बड़ा घनिष्ट पाया जाता है।सिनेमा का निर्माण कई अलग अलग आधार पर हो सकता है जिसको सिनेमा का स्त्रोत भी कहा जा सकता है। जैसे की, कोई काल्पनिक घटना, सत्य घटना, विशिष्ट सांस्कृतिक परम्परा एवं मान्यता (जैसे की कान्तारा), युद्ध, वैज्ञानिक आविष्कार, अप्रिय घटनाये, नाटक, जीवनिया, उपन्यास एवं आपदाए । इन सभी स्त्रोतों में से सबसे बृहत और आसानी से उपलब्ध होने वाला स्त्रोत है उपन्यास। और इसका उपयोग सिनेमा निर्माताओं से पाया भी जाता है। आज विभिन्न देशो में विभिन्न भाषाओँ में उपन्यासों पर सिनेमा निर्मित का प्रचालन पाया जाता है। वैश्विक पटल पर हैरी पॉटर यह काल्पनिक उपन्यास के श्रृंखलाओं ने लोकप्रियता तो पाई है पर उसपर निर्मित सिनेमा की श्रृंखलाओं ने तो उससे भी ज्यादा लोकप्रियता हासिल की। यह दर्शाता है की उपन्यासों पर निर्मित सिनेमा का प्रचलन लोकप्रिय बन रहा है। एक और उपन्यास पढ़ते हुए एक मानसिक प्रकिया के साथ पाठक उपन्यास में रचित विविध प्रसंगों का अनुभव करता है तो दूसरी और यह सिनेमा अपने कथानक के प्रसंगों को साक्षात् समक्ष रखता है। कोई भी सिनेमा निर्माण से पाहिले उसका कथानक या पटकथा का लेखन किया जाता है अब यह जो कथानक या पटकथा है उसे अप्रकाशित उपन्यास में वर्गीकृत किया जाता है। इस हिसाब से प्रत्येक सिनमा निर्माण से पहले एक उपन्यास का निर्माण तो होता ही है पर हर उपन्यास पर सिनेमा निर्माण होगा ही ऐसा कहा नहीं जा सकता। पर यह उपन्यास पर निर्मित सिनमा की शुरुआत कहा से कब और कैसी हुई यह जानना जरुरी बनाता है पर इसके पहले साहित्य में उपन्यास और सिनेमा को समझाना जरुरी बनाता है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

साहित्य में उपन्यास और सिनेमा: लेखन द्वारा निर्मित कोई भी संग्रह को साहित्य कहा जा सकता है। साहित्य शब्द का उपयोग मुख्यत कला के रूप में किया जाता है। कला के रूप में साहित्य में संस्मरण, डायरी, जीवनी, निबंध और पत्र जैसी विभिन्न गैर-काल्पनिक शैलिया भी शामिल की जा सकती हैं। इसकी बृहत परिभाषा में, साहित्य में किसी विशेष विषय पर गैर-काल्पनिक किताबें, लेख या अन्य लिखित जानकारी भी सम्मिलित हो सकती है। यह काल्पनिक या वास्तववादी दोनों हो सकती है। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, ने साहित्य को कहा है कि "लेखन के माध्यम से प्राप्त सर्वोत्तम विचारों की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति" ही साहित्य हैं ।[1] साहित्य में विभिन्न विधाए होती है। विधा का साधारण अर्थ प्रकार, किस्म, वर्ग या श्रेणी है। यह शब्द विविध प्रकार की रचनाओं को वर्ग या श्रेणी में बांटने से उस विधा के गुणधर्मो को समझने में सुविधा होती है। संस्कृत साहित्य के आचार्यों ने समूचे साहित्य को दृश्य काव्य और श्रव्य काव्य - इन दो भागों में विभाजित किया है।[2] कविता, लघुकथा, कहानी, उपन्यास, एकांकी, नाटक, प्रहसन, निबंध, आलोचना, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, काल्पनिक, विज्ञान आधारित काल्पनिक कथाऐ, व्यंग्य, रेखाचित्र, पुस्तक-समीक्षा या पर्यालोचन और सिनेमा आदि विविध साहित्य की विधाएँ मानी जा सकती है। यह विभिन्न विधाओं में उपन्यास और सिनेमा यह दोनों विधाओं का महत्वपूर्ण स्थान पाया जाता है। उपन्यास में लेखक मानव जीवन की तस्वीर को इस निपुणता से प्रस्तुत करता है कि हम उसमें डूब जाते हैं और उसमें वर्णित कथा हमें अपनी सी लगती है। उपन्यास में जीवन का व्यापक चित्रण किया जाता है।[3] सत्यजीत रे कहते है "फिल्म छवि हैं,फिल्म शब्द है,फिल्म गति है,फिल्म नाटक है,फिल्म कहानी है,फिल्म संगीत है-फिल्म में मुश्किल से एक मिनट का टुकड़ा भी इन सब बातो को एक साथ दिखा सकता है।" इसी क्रम में इंगमार बर्गमैन भी कहते है कि "फिल्म स्वप्न की तरह है,संगीत की तरह है| यह कलारूप जिस तरह हमारी चेतना को प्रभावित करता है,कोई अन्य कलारूप नहीं कर सकता| यह भावनाओं के हमारे घर में,आत्मा के अँधेरे कमरों में सीधे और गहरे प्रवेश करता है।"(बिप्लव, 2020)[4] वस्तुतः आज सिनेमा और साहित्य की संबंधात्मक अवधारणायें विभिन्न स्तरों पर अलगीकृत हो गयी हैं। लेकिन स्थूल रूप में एक अच्छे निर्देशक की साहित्यिक कृति पर आधारित फिल्म ने जनमानस को सिनेमा के असली ताकत से परिचित तो कराया ही है। (कुमार, 2010)[5]

वैश्विक पटल पर उपन्यास से सिनेमा निर्माण का विकास: सर्व प्रथम ट्रिलबी और लिटिल बिली (1896) सिनेमा जो की ट्रिल्बी एक सर्वाधिक बिकने वाला उपन्यास था जो 1895 में प्रकाशित हुआ था। जिसमे 45-सेकंड का एक दृश्य था जिसमें उपन्यास के एक हिस्से को दर्शाया गया था। तदुपरांत द डेथ ऑफ़ नैन्सी साइक्स (1897) सिनेमा जो की ओलिवर ट्विस्ट उपन्यास, जो 1838 में प्रकाशित हुई था,

[1] https://en.m.wikipedia.org/wiki/Literature
[2] https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A7%E0%A4%BE
[3] https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/hindi-literature-study-notes/
[4] बिप्लव, सु. (2020) सिनेमा के विविध संदर्भ, दिल्ली: अनुज्ञा बुक्स, ISBN: 978-93-89341-76-8
[5] कुमार, एच. (2010) *सिनेमा और साहित्य,* दिल्ली: संजय प्रकाशन, ISBN: 8174530142 पृ. 16

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

मिस्टर बम्बल द बीडल (1898) ओलिवर ट्विस्ट का अगला रूपांतरण था,[6] 1899 में जॉर्ज मेलीज़ द्वारा रूपांतरित "सिंड्रेला" किसी किताब की पहली कहानी थी जो एक वास्तविक फिल्म थी।[7] द पिलर ऑफ़ फायर (1899) जो की 1887 में प्रकाशित, अंग्रेजी लेखक एच. राइडर हैगार्ड का उपन्यास शी: ए हिस्ट्री ऑफ एडवेंचर पर बनी थी, द डेथ ऑफ पुअर जो (1901) यह चार्ल्स डिकेंस के उपन्यास ब्लेक हाउस (1852) के एक दृश्य का रूपांतरण था। स्क्रूज, या मार्लेज़ घोस्ट (1901) यह सिनेमा चार्ल्स डिकेंस की 'ए क्रिसमस कैरल' (1843) अब तक की सबसे अधिक रूपांतरित पुस्तकों में से एक है, क्को वादिस (1901) यह सिनेमा क्को वादीस: ए नैरेटिव ऑफ द टाइम ऑफ नीरो पोलिश लेखक हेनरिक सिएनक्यूविक का एक ऐतिहासिक उपन्यास है, जो 1895 से 1896 तक क्रमबद्ध था। गुलिवर्स ट्रेवल्स अमंग द लिलिपुटियंस एंड द जाइंट्स (1902) यह सिनेमा गुलिवर्स ट्रेवल्स (1726), जोनाथन स्विफ्ट का एक व्यंग्य उपन्यास से निर्मित हुआ, रॉबिन्सन क्रूसो (1902) नमक सिनेमा रॉबिन्सन क्रूसो डेनियल डेफ़ो द्वारा लिखित एक ऐतिहासिक उपन्यास है। एवं जॉर्ज मेलियस द्वारा निर्देशित सैकड़ों फिल्मों में से, ए ट्रिप टू द मून (1902) सबसे प्रसिद्ध है। यह फिल्म मोटे तौर पर उपन्यास फ्रॉम द अर्थ टू द मून (1865) और उसके सीक्वल, अराउंड द मून (1870) पर आधारित थी, दोनों जूल्स वर्ने द्वारा लिखे गए थे।[8]

मराठी उपन्यासों पर आधारित सिनेमा के निर्माण का विकास

मराठी उपन्यास से सिनेमा निर्मिती की शुरआत "कुंकू" सिनेमा से पाई जाती है। यह फिल्म नारायण हरी आपटे द्वारा लिखित उपन्यास "न पटणारी गोष्ट" के कथानक पर 1937 में वी. शांताराम द्वारा निर्देशित की गई। इसे मराठी में पहिला प्रयास कहा जा सकता है (इसके पहले भी यह प्रयोग पाए जा सकते है पर जानकारी उपलब्ध नहीं)। तदुपरांत "श्याम ची आई" सिनेमा जो साने गुरूजी द्वारा लिखित "श्याम ची आई" यह उपन्यास पर 1953 में प्रल्हाद केशव अत्रे द्वारा निर्देशित की गई। और 1977 में गो. नि. दांडेकर द्वारा लिखित "जैत रे जैत" उपन्यास पर जब्बार पटेल द्वारा निर्देशित "जैत रे जैत" सिनेमा आता है। उसके बाद 1979 में सिहांसन, 1995 में बनगरवाडी आदि सिनेमा आते है। 2009 में डॉ.राजन गवस द्वारा लिखित "चौंडक" और "भंडारभोग" उपन्यास पर निर्मित राजीव पाटिल निर्देशित "जोगवा" सिनेमा आया। 2010 में जयवंत पवार का उपन्यास "अधांतर" पर महेश मांजरेकर निर्देशित "लालबाग परळ", 2010 में आनंद यादव का उपन्यास "नटरंग" पर रवी जाधव निर्देशित "नटरंग", 2011 में मिलिंद बोकील के उपन्यास "शाळा" पर संजय ढाके द्वारा निर्देशित "शाळा", 2012 में व.पु.काळे का उपन्यास "पार्टनर" पर समीर रमेश सुर्वे निर्देशित "श्री पार्टनर",2013 में राजन खान की उपन्यास "सत ना गत" पर राजू पर्सेकर द्वारा निर्देशित "सत ना गत", और सुहास शिरवळकर के उपन्यास "दुनियादारी" पर संजय जाधव निर्देशित "दुनियादारी", 2014 में डॉ प्रकाश बाबा आमटे के उपन्यास "प्रकाशवाट" पर समृद्धी पोरे द्वारा निर्देशित "डॉ प्रकाश बाबा आमटे", 2017 में बाबा भांड के उपन्यास "दशक्रिया" पर संदीप भालचंद्र पाटील द्वारा निर्देशित "दशक्रिया", 2018 में कांचन काशिनाथ घाणेकर के उपन्यास "नाथ हा माझा" पर अभिजीत देशपांडे द्वारा निर्देशित "आणि काशीनाथ घाणेकर", 2019 में नीला सत्यनारायण के उपन्यास "ऋण" पर समीर रमेश सुर्वे निर्देशित "जजमेंट" और 2019 में अण्णाभाऊ साठे का उपन्यास "आवडी" पर प्रवीण क्षीरसागर द्वारा निर्देशित "इभ्रत" आदि प्रयास पाए जाते है।

[6] https://reelrundown.com/film-industry/The-First-10-Book-to-Film-Adaptations-in-History

[7] https://www.quora.com/What-was-the-first-book-to-be-made-into-a-movie#:~:text=%E2%80%9CCinderella%E2%80%9D%2C%20adapted%20in%201899,of%20course%2C%20it%20was%20silent

[8] https://reelrundown.com/film-industry/The-First-10-Book-to-Film-Adaptations-in-History

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

2022 में अरुण साधू का उपन्यास "झिपऱ्या" पर केदार वैद्य द्वारा निर्देशित "झिपऱ्या", और विश्वास पाटील का उपन्यास "चंद्रमुखी" पर प्रसाद ओक निर्देशित "चंद्रमुखी" आदि सिनेमा पाए जाते है।

उपन्यास से सिनेमा क्या सकारात्मक : उपन्यास से सिनेमा के सकारात्मक गुण भी होतें हैं।जो उपन्यास लोगो तक नहीं पहुँच पाता हैं वह सिनेमा के माध्यम से लोगो तक पहुँच ता हैं।कभी कभी उपन्यास पढ़ने का समय नहीं मिलाता हैं तो सिनेमा के माध्यम से वह देखा,सुना अनुभव किया जा सकता हैं। उपन्यास यह लम्बा और विस्तृत होता है,तो सिनेमा के माध्यम से वह कुछ घंटो में देखने को मिलाता हैं**।** उपन्यास से सिनेमा निर्माण एक अच्छी सोच हैं]उपन्यास से सिनेमा निर्माण में एक बहुत बड़ी टीम काम आती हैं। कहानी,पात्रों,सवांद,गानों से उपन्यास की कहानी को प्रस्तुत करता हैं**।**

उपन्यास से सिनेमा क्या नकारात्मक :उपन्यास से सिनेमा निर्माण के नकारात्मक भी गुण होते हैं । ये करते समय कभी कभी उपन्यास को पूरी तरह से सिनेमा प्रस्तुत नहीं कर सकता क्योकि कभी कभी सिनेमा में उपन्यास की कहानी को तोड़ मरोड़कर दिखाया जाता हैं वो समय और उस वक्त की मांग के हिसाब से वह करना पड़ता हैं।उदाहरण के लिए बाजीराव मस्तानी यह सिनेमा मराठी उपन्यास राऊ से लिया गया है उसमें दिए गये कुछ घटनाओं में बदलाव किया गया ।सिनेमा में काशीबाई और मस्तानी इन दोनों पात्रो को एक साथ दर्शाया गया हैं।उपन्यास में इसका जिक्र कहीं नहीं हैं। ऋण उपन्यास से जजमेंट सिनेमा बना जैसे उपन्यास में अदालत की घटनाओं को एक ही पन्ने पर दर्शाया गया है और सिनेमा में यह बार बार दर्शाया गया हैं **।**

निष्कर्ष: उपन्यास और सिनेमा यह दोनों साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। जो एक केवल दृश्य है तो वहीं सिनेमा दृश्य-श्राव्य विधा है। साहित्य का प्रयोग सिनेमा कलात्मक रूप से करता आया है। में दोनों की जगह अहम रही है। दोनों के अपने अलग-अलग श्रोता समूह तो है ही पर इनमें समान समूह भी है जो इन दोनों विधाओ को पसंद करते है। उपन्यास से सिनेमा निर्मिती का प्रचलन वैश्विक, मराठी और अन्य भारतीय भाषाओँ के साहित्य में मिलता भी है। किंतु जब उपलब्ध प्रसिद्ध उपन्यासों की बात करें तो उसकी संख्या काफी बड़ी होगी, उसकी तुलना में उन उपन्यासों पर निर्मित सिनेमा की बात करें तो संख्या काफी कम पाई जाती है। सिनेमा के ऐतिहासिक विकास तो वैश्विक और मराठी पटल पर तो तगादा दिखाई पड़ता है एवं इसकी शुरवात काफी पहले से भी पाई जाती है। पर उपलब्ध उपन्यास और उसपर निर्मिती सिनेमा इसका अनुपात निकला जाए तो वह काफी सुक्ष्म होगा। आज बुत से ऐसे उपन्यास है जिसके और सिनेमा निर्माताओ और निर्देशकों की नजर जाना जरुरी दिखाई देता है। वही दूसरी और उपन्यासों पर निर्मित सिनामाओं के ऐतिहासिक संदर्भ में यह भी पाया जाता है की, उपन्यास से अंशतः, मध्यमत: और पूर्णतः प्रेरिन सिनेमा बनायी जाती है। तो कुछ परिपेक्ष्य में उपन्यास और सिनेमा के नाम सरीके भी पाए जाते है तो कुछ परिपेक्ष्य में यह पूर्णतः भिन्न पाए जाते है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संदर्भ सूची :

बिप्लव, सु. (2020) सिनेमा के विविध संदर्भ, दिल्ली: अनुज्ञा बुक्स, ISBN: 978-93-89341-76-8

कुमार, एच. (2010) *सिनेमा और साहित्य,* दिल्ली: संजय प्रकाशन, ISBN: 81-7453-014-2 पृ. 16

https://en.m.wikipedia.org/wiki/Literature

https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A7%E0%A4%BE

https://www.adda247.com/teaching-jobs-exam/hindi-literature-study-notes/

https://reelrundown.com/film-industry/The-First-10-Book-to-Film-Adaptations-in-History

https://www.quora.com/What-was-the-first-book-to-be-made-into-a-movie#:~:text=%E2%80%9CCinderella%E2%80%9D%2C%20adapted%20in%201899,of%20course%2C%20it%20was%20silent

Cite Your Article as

Vrushali Suresh Bapat & Dr. Surabhi Viplav. (2024). UPANYAS SE CINEMA NIRMAN KA VAISHWIK EVUM MARATHI PARIPEKSH. In Scholarly Research Journal for Interdisciplinary studies (Vol. 12, Number 81, pp. 54–59).

Zenodo. https://doi.org/10.5281/zenodo.10784641

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies